INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2020-21)

प्रश्न बैंक – कक्षा-दसवीं   कविता – मनुष्यता (मैथिलीशरण गुप्त)

1. कवि ने कैसी मृत्यु को 'सुमृत्यु' कहा है?
   उत्तर: जो मनुष्य दूसरों के लिए अच्छे काम कर जाता है, उस मनुष्य को मरने के बाद भी लोग याद रखते हैं। कवि ने ऐसी मृत्यु को ही सुमृत्यु कहा है। जो परोपकार के कारण सम्माननीय हो, वह सुमृत्यु है ।
2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
   उत्तर: जो आदमी पूरे संसार में आत्मीयता और भाईचारे का संचार करता है, उसी व्यक्ति को उदार माना जा सकता है। उदार व्यक्ति का प्रत्येक कार्य परोपकार के उद्देश्य से होता है । वह संपूर्ण विश्व में अपनत्व का भाव जगाता है । वह अपने आपको विश्व का एक अभिन्न अंग बना देता है । उदार व्यक्ति की कीर्ति चारों ओर फैलती है । स्वयं धरती भी उसके प्रति कृतार्थ भाव मानती है । वास्तव में जो व्यक्ति दूसरों के लिए अपना तन-मन-धन अर्थात् सर्वस्व समर्पित कर देता है, वही उदार या सहृदय कहलाता है । वह पूरे संसार के लिए समानता और अखंडता का भाव रखता है ।
3. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?
   उत्तर: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए एक अहम संदेश दिया है। वे परोपकार का संदेश देना चाहते हैं। दूसरे का भला करने में चाहे अपना नुकसान ही क्यों न हो, लेकिन हमेशा दूसरे का भला करना चाहिए। राजा रंतिदेव ने स्वयं भूख से व्याकुल होते हुए भी अपने हाथ में पकड़ा हुआ भोजन का थाल भूखों को दे दिया था । ऋषि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए और वृत्रासुर के वध के लिए अपनी अस्थियाँ दान में दे दी थीं । गांधार के राजा उशीनर ने शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस तक दान कर दिया था । कर्ण ने ब्राह्मण वेश में आए देवराज इंद्र को अपने शरीर का रक्षा-कवच (चर्म) तक दान में दे दिया था । इन उदाहरणों के माध्यम से कवि मनुष्यता को त्याग, बलिदान, मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है । वह चाहता है कि मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करें । वह दीन-दुखियों, ज़रूरतमंदों के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तैयार रहे । निःस्वार्थ भाव से जीवन जीना, दूसरों के काम आना - यही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है, कवि जन-जन में इस भाव को जगाने का संदेश देना चाहता है ।
4. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
   उत्तर: इन शब्दों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सभी मनुष्य हमारे भाई-बंधु हैं। कवि के अनुसार इस बात की समझ एक बहुत बड़ा विवेक है। मनुष्य-मनुष्य के बीच में जाति-धर्म, क्षेत्र, भाषा या रंग के आधार

पर कोई भेद नहीं होता है। यहाँ मनुष्य के मन में विश्वबंधुत्व की भावना को प्रबल बनाने का प्रयास किया गया है। इस बात को स्वीकार करना ही सबसे बड़ा ज्ञान है। वस्तुतः हम सभी उसी परमपिता परमेश्वर की संतान हैं, जो सबके लिए एक है। अपने कर्मफल के अनुसार हम भले ही अलग-अलग दिखते हैं, परंतु हम सबकी अंतरात्मा एक जैसी है।

5. कविता में पशु-प्रवृत्ति किसे कहा गया है?

उत्तर: स्वयं अपने लिए खाना और जीना तो पशु का स्वभाव है। सच्चा मनुष्य वह है जो संपूर्ण मनुष्यता के लिए जीता और मरता है।

6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य का जीवन आपसी सहकारिता पर निर्भर करता है। इसलिए कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा दी है। इससे आपसी मेल-भाव बढ़ता है तथा हमारे सभी काम सफल हो जाते हैं। यदि हम सभी एक होकर चलेंगे तो जीवन-मार्ग में आने वाली हर विघ्न-बाधाओं पर विजय पा लेंगे। जब सबके द्वारा एक साथ प्रयास किया जाता है तो वह सार्थक सिद्ध होता है। सबके हित में ही हर एक का हित निहित होता है। आपस में एक दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ने से प्रेम व सहानुभूति के संबंध बनते हैं तथा परस्पर शत्रुता एवं भिन्नता दूर होती है। इससे मनुष्यता को बल मिलता है। कवि के अनुसार यदि हम एक दूसरे का साथ देंगे तो हम प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर: किसी भी व्यक्ति को केवल अपने लिए जीने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मनुष्य को दूसरों के लिए जीना चाहिए। इसी में सबका भला है। समृद्धशाली होने पर भी मनुष्य को गर्व-रहित जीवन जीना चाहिए। न तो मनुष्य को अपने पैसों पर घमंड करना चाहिए और न ही सनाथ होने पर क्योंकि यहाँ कोई भी अनाथ नहीं है। वह ईश्वर ही सबका परमपिता है। उसके रहते भला कोई अनाथ कैसे हो सकता है। ईश्वर संपूर्ण सृष्टि के नाथ हैं, संरक्षक हैं। उनकी शक्ति अपरंपार है। वे अपने अपार साधनों से सबकी रक्षा और पालन करने में समर्थ हैं। वह प्राणी अत्यंत भाग्यहीन है, जो उस परमपिता के रहते हुए भी स्वयं को अधीर, अशांत और अतृप्त अनुभव करता है।

8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: इस कविता के माध्यम से कवि आपसी भाईचारे का संदेश देना चाहते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी ने मानव मात्र को त्याग, प्रेम, बलिदान, परोपकार, सत्य, अहिंसा जैसे मानवीय गुणों को अपनाने का संदेश दिया है। मानव-जीवन एक विशिष्ट जीवन है। अतः अपने से पहले दूसरों की चिंता करते हुए अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और अपनी वैचारिक शक्ति का सदुपयोग करना मानव का कर्तव्य है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। वह दीन-दुखियों, ज़रूरतमंदों के लिए

बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहे। वह पौराणिक कथाओं के माध्यम से विभिन्न महापुरुषों जैसे दधीचि, कर्ण, रंतिदेव के अतुलनीय त्याग से प्रेरणा ले। ऐसे सत्कर्म करे जिससे मृत्यु उपरांत भी लोग उसे याद करें। उसका यश मानव मात्र के हृदय में जीवित रहे। निःस्वार्थ भाव से जीवन जीना, दूसरों के काम आना व स्वयं ऊँचा उठने के साथ-साथ दूसरों को भी ऊँचा उठाना ही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है।

9. भाव स्पष्ट कीजिए - "विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा, विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?"

उत्तर: इस पंक्ति का भाव यह है कि महात्मा बुद्ध के युग में बलि-प्रथा का प्रचलन था। लोगों ने इसे धार्मिक कर्मकांड के रूप में स्वीकार कर लिया था, परंतु महात्मा बुद्ध ने इसका विरोध किया और प्राणिमात्र के प्रति अपार दया और करुणा के कारण अपने विरोधियों को भी क्षमा कर दिया। महात्मा बुद्ध की इसी उदारता, दया, करुणा आदि के सम्मुख सभी नतमस्तक हो गए और उनके अनुयायी बने।

10. भाव स्पष्ट कीजिए - "अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।"

उत्तर: कवि प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में हम मनुष्यों को प्रेरित करते हुए कह रहे हैं कि हमारे रास्ते एक ही हैं, इसलिए हम सभी को बिना किसी तर्क के एक सावधान यात्री की तरह आगे बढ़ना चाहिए।

****